मनुष्य बनो

انسان بنو

मानवता के मुख्य नियम

ना०मू०
५-२५

संस्थापक

दयाल फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'आर-स्वा'

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५.२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तवदीली भी।

प्रकाशक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदंः पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २७ | श्रावण सं० २०३४ वि० जुलाई, १९७७ | संख्या १०

* साखी *

सतगुरु मिल निर्भय भया, रही न दूजी आस ।
जाय समाना शब्द में, सत्त नाम विश्वास ॥ १ ॥

जा गुरु ते भ्रम न मिटै, भ्रान्ति न चित से जाय ।
सो गुरु झूँठा जानिये, त्यागत देर न लाय ॥ २ ॥

झूठे गुरु के पक्ष को, तजत न कीजै बार ।
द्वार न पावे शब्द का, भटके बारम्बार ॥ ३ ॥

सांचे गुरु के पक्ष में, मन को दे ठहराय ।
चंचल ते निश्चल भया, नहिं आवे नहिं जाय ॥ ४ ॥

कनफूँका गुरु हद्द का, बेहद का गुरु और ।
बेहद का गुरु जब मिलै, तो लगै ठिकाना ठौर ॥ ५ ॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आवश्यक सूचना

दयाल मानवता प्रचाररक सभा (रजिस्टर्ड) नई दिल्ली की कार्य-कारिणी ने दि० २६-६-७७ की बैठक में यह निर्णय है कि दक्षिण दिल्ली निबासियों व सतसंगियों के लाभार्थ माह के अन्तिम रबिवार को एक सतसंग धर्म भवन नई दिल्ली साउथ एक्सरेशन पार्ट १, में किया जाया करेगा ।

सभी प्रेमियों व इष्ट मित्रों तथा शुभ चिन्तकों से निवेदन है कि जुलाई महीने की २४ तारीख को प्रातः ८ बजे से ९ बजे तक सतसंग में शामिल होकर लाभ उठायें ।

भवदीय

नन्दलाल उर्फ आनन्द दयाल

मंत्री

धन्यवाद

श्री वामनराऊ महाराष्ट्र से ३०) रु०, काशीनाथ जी, गोरखपुर से १०) रु०, अमरनाथ वर्मा, गोरखपुर से १०) रु०, सतपाल देवगन अमृतसर से ११) रु० 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ प्राप्त हुये हैं ।

हम इन सभी महानुभावों के अत्यन्त आभारी हैं । और मालिक से प्रार्थना करते कि उनकी मनो कामनायें पूर्ण हों एवं जीवन में सुख समृद्धी एवं आनन्द प्राप्त हो ।

व्यवस्थ

अमूल्य बचन

१. नीच हृदय मनुष्यों से दूर रहो। वे बड़े ही भयानक और घातक होते हैं। स्वार्थ तक ही साथी रहते हैं।

२. तरुण पुरुषों को चाहिये कि युवतियों से बचते रहें। शास्त्र में जवान माता और पुत्र को तथा भाई बहिनों को भी एकान्त में बातें करने से मना किया है।

३. शरीर की अधिक सजाबढ, मांग, पट्टी, जेवर इत्र फुलेल, भड़कीली पोशाक आदि छिछोरपन एवं अज्ञानता के सूचक हैं। तड़क भड़क को अच्छे आदमी अधिक पसन्द करते हैं। सभ्य पुरुष सादगी पसन्द होते हैं।

४. अपने पुरुषार्थ से अपना निर्वाह करो, पेट के लिये दीन बनकर टुकड़े माँगना असभ्यता है।

५. अपने खानगी व्यवहारों को और गुप्त बातों को दूसरों पर कदापि प्रकट न करो।

६. अंग्रेज लोग अपनी देश की सभ्यता के कितने अभिमानी हैं कि वे भारत जैसे गर्म, देश में भी अपने देश की वेशभूषा कों नहीं छोड़ते। हम भारतीय अपने देश का पहनावा छोड़कर दूसरे देश का पहनावा अपनाते रहते हैं।

७. निगाह नीची करके चलना चाहिये, गर्दन नीची न हो।

८. मजाक उसी से करो जो मजाक सहने की शक्ति रखता हो।

९. सदैव मधुर और शिष्ट वाणी बोलो क्योंकि रूप रंग, चाल ढाल, पहिनावे से सभ्य असभ्य उतना नहीं पहिचाना जाता जितना बात-चीत से।

१०. हँसी मजाक प्रायः जी बहलाने या चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न करने के लिये की जाती है। ऐसी हँसी मजाक न करे जो किसी को बुरा मालुम हो।

११. अपने घर आये भिक्षुक को यदि आप कुछ देना नहीं चाहते तो झिड़को मत।

—स्वर्गीय देवीचरन मीतल

] ॥ मनुष्य बनो ॥

पुष्पाञ्जली

• साधक का वह दिन सबसे सुन्दर होगा जिस दिन वह अपने ध्यान के समय अपने गुरु को सामने पाओगे।

जो भी भक्त जन किसी सन्त या गुरु से मिलने जाते हैं उनका एक एक चरण यज्ञ के समान होता है और एक एक यज्ञ का फल देता है।

जो लोग गुरु की याद में मस्त रहते हैं उनके सारे पाप स्वयं ही कट जाते हैं।

यह जान लो कि जो मनुष्य सतसंग के लिये जायेगा। गुरु को प्रणाम करेगा उनको पुष्प अर्पण करेगा उनकी बात सुनेगा ध्यान करेगा तो संसार के तमाम यातनायें स्वयं ही मिट जायेगी और जो चाहेगा वही पायेगा।

जो भी सतसंगी सप्ताह में एक वार सतसंग का आनन्द लेगा उसके सात दिन के अपराध कट जायेंगे और उसको अन्न व वस्त्र की कभी कमी नहीं रहेगी।

जो साधक इच्छा के विपरीत किसी का अन्न ग्रहण कर लेता है और अगर बदले में दूसरे दिन किसी गरीब को खाना खिला देता है तो उस पर उस भोजन का प्रभाव नहीं रहता और उसको आत्मिक शान्ती अवश्य मिलती है।

(साधना सौजन्य से)

क्रमशः

राजकुमार ने बाप की आज्ञा मान ली और फिर सेना लेकर कावेरी की ओर चल निकला।

❋ ६ ❋

राजकुमार कई दिनों के पीछे उसी जंगल में आया जहाँ ऋषिदत्ता उसे पहिले पहिल मिली थी। उसने झील को देखा। झील के किनारे खजूर और केले के वृक्ष को देखा—"हाय! वह वही जगह है जहाँ प्यारी ऋषिदत्ता का दर्शन मिला था! वही झोंपड़ा! वही मन्दिर! वही मूर्ति! जिसे देखकर पहिले चित्त प्रसन्न हुआ था आज वहीं महा दुखदायी प्रतीत हो रहा है। अमृत विष हो गया। ऋषि पुत्री को संसार ने डाइन बनाकर छोड़ा। अब मेरे जीवन का सहारा न रहा। वह चली गई और मैं अब तक इस असार संसार में दुख भोगने के लिये जी रहा हूं। कौन जाने ऋषिदत्ता कैसी थी परन्तु मैं तो निर्दोष हूं। मुझ पर क्यों दुख का पहाड़ आकर गिर पड़ा!"

वह इसी प्रकार विलाप करता हुआ मन्दिर की ओर बढ़ा। दाहिनी आंख फड़कने लगी, 'हा! यह क्या शकुन है! क्या फिर किसी देवी का दर्शन मिलेगा! विधाता ने एक से मिलाकर अलग कर दिया। अब क्या होने वाला है?"

जब वह मन्दिर के अन्दर गया एक पन्द्रह सोलह वर्ष का बांका और रूपवान साधू टोकरी में फूल लिये हुये आया। उसका रंग बहुत ही काला था परन्तु देखने में बड़ा ही सुन्दर और तेजस्वी प्रतीत होता था। यह ऋषिदत्ता थी। उसने सोचा, "कनकरथ रुक्मिणी के साथ ब्याह करने जा रहा है। इसके अतिरिक्त और कोई कारण उसके यहां आने का नहीं हो सकता।" उसने फूल सामने रक्खे। राजकुमार ने ले लिया और पूजा करने के पीछे उस साधू को आदर सत्कार के साथ बिठाया और कई अच्छे २ कपड़े भेंट किये। ऋषिदत्ता को कपड़ों की आवश्यकता भी थी इसलिये उसने ले लिये।

राजकुमार ने पूछा, "आप कब से यहां आये ? कैसे आये ? कब तक रहेंगे ? और कब यहाँ से जायेंगे ?" ऋषिदत्ता मुसकराई, "यहाँ आये हुये मुझको कई वर्ष हो गये। घूमते फिरते हुये यहाँ आ गया। कब तक रहूँगा या कब यहां से चला जाऊँगा इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता क्योंकि रहना और जाना अन्न जल के अधीन है। पहिले यहां एक ऋषि हरिसेन रहते थे। उनकी लड़की ऋषिदत्ता बड़ी ही सुन्दरी और धर्मात्मा थी। कोई राजपूत आकर उसको ले गया। ऋषि भी मर गया। मुझको यह जगह पसन्द आई। इसलिये यहां आकर डेरा जमाया। आज आपके देखने से मेरे तप का फल मुझको मिल गया।"

राजकुमार—"यह बात मेरी समझ में नहीं आती। आपकी बातों से मुझको सुख और आनन्द मिलता है और मेरी आंखें आपकी ओर से नहीं हटना चाहती।"

ऋषिदत्ता—"इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? प्रेम की धार दोनों ही ओर से निकलती है। शहरों की गलियों में घुमते फिरते हुये हमको बहुधा ऐसी सूरतें देखने में आती हैं जिनसे प्रेम हो जाता है और दूसरों से घृणा हो जाती है। कमल सूर्य को देखकर खिल जाता है। कुमुदनी को चांद के दर्शन से सुख मिलता है परन्तु सूर्य के दर्शन से कुमला जाती है। इस संसार में हर जगह यही दशा है।"

राजकुमार—"दिल चाहता है कि आप मेरे मित्र हों।"

ऋषिदत्ता—'फकीरों से कब कोई करता है प्रीति।
मसल है कि योगी हुये किसके मीत॥"

राजकुमार—परन्तु अपना दिल आपको कैसे खोलकर दिखाऊँ ? आप मेरी बातों का विश्वास नहीं करते।"

ऋषिदत्ता—मुझे आप पर विश्वास है। दिल को दिल से राह है। दिल दिल की बात तो भली भाँति समझता, जानता, और

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

पहिचानता है। इसके लिये किसी गवाह की आवश्यकता नहीं है।"

राजकुमार—"तब मेरे साथ कावेरी को चलिये। बिना आपके मेरा एक पग भी आगे की ओर न पड़ेगा। लौटने पर मैं आपको यहाँ पहुंचाकर तब अपने देश को जाऊँगा।"

ऋषिदत्ता—"राजा और साधू का मेल कैसा ?"

राजकुमार—"साधू दयालु और कृपालु होते हैं। वह दूसरों की प्रार्थना को अस्वीकार नहीं करते। महाराज ! मैं आपकी सेवा तन मन और धन से करूँगा 'प्राण तक आप पर न्योछावर है।"

ऋषि—'यह आप कहते क्या हैं? कहना सहज और करना कठिन है किसका प्राण किस पर न्योछावर हुआ है ! यह सब कहने की बातें हैं। यही तो मुख्य कारण है कि साधू संसार को छोड़कर सबसे अलग अलग रहते हैं।"

राजकुमार के साथियों ने भी साधू से चलने की प्रार्थना की साधू भी यही चाहता था कि राजकुमार साथ रहे। साधू ने राजकुमार की बात मान ली। दोनों रात के समय एक ही कमरे में सोये। कई दिनों पीछे कावेरी नगर में पहुंचे। साधू और राजकुमार बराबर साथ साथ रहा करते थे केवल सन्ध्या के समय दोनों अलग हो जाया करते थे। उस समय साधू अपना रंग बदल लिया करता था।

❋ १० ❋

राजा सूरसुन्दर ने आदर के साथ राजकुमार को महल में ले जाकर उतारा। धूम धाम के साथ उत्सब मनाया गया। नाच रंग के जलसे होते रहे। शुभ महूर्त्त में रुक्मिणी के साथ ब्याह भी हो गया। वह दोनों साथ रहने लगे परन्तु कनकरथ को साधू प्रेम का इतना ध्यान रहता था कि वह उसके कमरे के निकट ही सोता था।

एक दिन रुक्मिणी ने पूछा, "महाराज ! वह अभागिनी ऋषिदत्ता कैसी थी जिसने आपके मन को चुरा लिया था ?"

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

राजकुमार बोला, 'सूर्य को उसके सदृश्य कैसे कहूं ! वह गर्म है। चाँद से कैसे उपमा दूँ। वह काला और कलंकित है। इन्द्र की परियाँ उसके सामने तुच्छ हैं। मेनका उसको देखकर दासी बनने की इच्छा करती जैसे मस्त मोर अपने पैरों को देखकर महा मलीन हो जाता है वैसे ही उर्वशी भी अपने रूप को भूलकर लज्जित हो जाती. कमल कीचड़ से उत्पन्न होता है। ऋषिदत्ता ऋषि पुत्री थी वह साक्षात सौन्दर्य की देवी थी। ब्रह्मा ने आज एक ऐसा सुन्दर सलोना रूप न बनाया था। तुमने देखा नहीं। इसलिये तुम समझ नहीं सकती हो !"

रुक्मिणी—"मेरे ही मुँह पर मेरी सौत की इतनी बड़ाई है ?"

राजकुमार—"फिर तुमने पूछा क्यों ?"

रुक्मिणी—"इसलिए कि मैं तुमसे सुनू कि वह डाइन थी !"

राजकुमार—"मैं कुछ नहीं कह सकता।"

रुक्मिणी—"तो क्या अब भी आपको उसका प्रेम है ?"

राजकुमार—'क्यों न हो ! यह दिल मरते मरते भी उस पवित्र देवी के सच्चे प्रेम को भुला न सकेगा।"

रुक्मिणी के शरीर में आग लग गई। वह आप ही बोल उठी, "हाय ! सुलसा का कोई उपाय काम न आया ! मेरी सौत अब तक राजकुमार के हृदय में बसती है ! मुझको कैसे चैन आये ! मैं उसे जीवित पाकर कैसे सुखी रह सकती हूं ! मैंने सब कुछ कर डाला परन्तु, वह अब तक तुम्हारे पास है !"

राजकुमार—"तुमने क्या क्या किया ?"

रुक्मिणी क्रोध की अग्नि में जल रही अपने आपको सँभाल न सकी। ऐसा जान पड़ता था मानों सरस्वती देवी उसकी जिभ्या पर बैठकर ऋषिदत्ता को निर्दोष सिद्ध करने आई थी। वह बोली थी, "मैंने ही तो सुलसा की सहायता से उसे डाइन प्रसिद्ध कराया। उसी ने उसके मुँह से लूह लगाया। कई लड़कों की जानली। मैंने तुम्हारे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

लिये पाप किये फिर भी तुम मेरे नहीं हुये और मरने पर भी ऋषि-दत्ता की याद को नहीं भूलते !"

राजकुमार—"अरी दुष्टा और पापिनी रुक्मिणी ! तू ने अपने साथ मुझको भी नर्क में ढकेल दिया ! काम के वशीभूत होकर तू ने एक अद्वितीय देवी की जान ली !"

यह कहकर उसने रुक्मिणी को अपने पास से ढकेल दिया और आप भागकर अपने साथियों के खेमे में आया। लकड़ियाँ पड़ी हुई थीं, चिता बनाई और उसी समय उसमें बैठकर जल जाना चाहा। साथियों ने पकड़ लिया। महल में कोलाहल मच गया। सूरसुन्दर भी दौड़ता हुआ आया, 'राजकुमार ! मैं सब सुन चुका हूं। होने वाली बात होकर रहती है। तुम स्त्री न बनो और स्त्री की तरह जान न दो।"

उसने कहा, "अब मेरा जीना कठिन है। मैंने कमल को झील से निकालकर आग में झुलस दिया। यह महा पाप है ! यह मुझे कभी जीने न देगा। मैं कुढ़ कुढ़ कर मरूँगा।

रुक्मिणी भी महा दुखी हुई। महल की स्त्रियों ने उसको बहुत ही धिक्कारा। वह भी रोती हुई आ पहुँची। अपने अपराधों की क्षमा करने के लिये प्रार्थना करने लगी। राजकुमार ने उसकी ओर आँख तक न उठाई।

अन्त में लोगों ने उस भेष बदले हुये साधू से जो वहां ही था, "महाराज ! राजकुमार के हृदय में आपकी श्रद्धा और भक्ति है। आप उसको आत्महत्या से बचाइये।"

साधू ने राजकुमार से कहा "राजकुमार ! एक साधारण, स्त्री के लिये इस प्रकार जान देना तुम्हारे लिये उचित नहीं है। तुमने बचन दिया था कि मुझको झील के किनारे पहुँचा दोगे। क्या भूल गये ? क्षत्री अपने प्रण को निवाहते हैं; अपनी बातों पर आरूढ़ रहते हैं। इसके अतिरिक्त यदि तुम मर जाओगे तो फिर ऋषिदत्ता से कैसे मिल सकोगे ! यदि जीवन है तो सम्भव है कि वह फिर कहीं से

आकर तुमसे मिल रहे।"

राजकुमार—"महाराज ! मुझको धोखा न दो। झूँठी आशा न बँधाओ। साधू झूंठ नहीं बोलते। मरे हुये से कैसे मिलना सम्भव है?"

साधू—"मुझको बचन दो और मैं ऋषिदत्ता से तुमको मिला दूँगा। मैं विश्वास दिलाता हूं।"

राजकुमार—"फिर तो कहिये क्या आपने उसको कहीं अपनी आँखों से देखा है या किसी से सुना है? क्या वह अब तक जीती है, और आप उसका स्थान जानते हैं? कहिये और जल्द कहिये। मेरे दुखो को दूर कीजिये।"

साधू—मैं जानता हूं और भली भाँति जानता हूं कि वह अब तक जीती है। मैं अपने मित्र के लिये उसे यहां मँगा भी सकता हूं।

राजकुमार—"यदि यह सम्भव है तो देर न कीजिये। आप जो कुछ कहेंगे मैं करूँगा। या तो यह प्राण इस शरीर से अभी निकल जाये या मेरी ऋषिदत्ता मुझको मिल जाये।"

साधू—"उसे बहुत दूर से लाना हैं। तुम शान्त और सावधान हो जाओ।"

राजकुमार—"मैं इससे पहिले तुमको अपना मन दे चुका था। अब आत्मा तक तुम पर न्यौछावर करने को तैयार हूं।"

साधू—'आत्मा अपने पास रहने दो नहीं तो तुम ऋषिदत्ता से कैसे मिल सकोगे! हां एक बार अवश्य दो। यदि तुम देने को तैयार हो तो इनकार न करो और मैं ऋषिदत्ता को तुमसे अवश्य मिला दूंगा।"

राजकुमार—"जी हाँ ! स्वीकार है।"

साधू—"तब मैं ऋषिदत्ता को लेने जाता हूँ।"

* ११ *

साधू परदे के अंदर चला गया, नहाया धोया, रंग बदला उस समय तक लोग राजकुमार को पकड़े हुये थे कि कही वह चिता में न कूद पड़े।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

थोड़ी देर पीछे खेमे के परदे से एक महा सुन्दरी और अति सुकुमारी स्त्री धीरे धीरे मस्त हाथी की तरह रुक रुक कर पांव जमाती हुई आई। बादल के परदो को फाड़कर जैसे बरसात के दिनों में फुदकता हुआ चांद निकल आया करता है वैसे ही वह स्त्री भी इठलाती हुई आई। 'यह कौन है? किसकी लड़की है? क्या इन्द्र ने किसी अप्सरा को पृथ्वी पर भेजा है? या साक्षात सौंदर्य ने रूप धारण कर रक्खा है।" राजकुमार ने देखा। अपने आपको छुड़ाकर दौड़ता हुआ उसके पास आया, "मेरी प्यारी ऋषिदत्ता मेरी प्यारी रानी!" और उसके गले से चिपट गया। दिल का उबला हुआ सोता आंखों की नहरों से गर्म पानी की धार बहाने लगा। यह पानी की बूँदे हैं या हृदय के अथाह सागर के अमूल्य मोती हैं। जो प्रेमी अपनी प्रिया पर प्रेम के साथ न्योछावर कर रहा है!

लोगों ने कहा, 'ऋषिदत्ता और रुक्मिणी में आकाश और पाताल का भेद है। कहां पूर्णिमा का चमकता हुआ चांद कहां टिमटिमाता हुआ दीपक! कहाँ हंस और कहां बगुला! कहाँ कुन्दन किया सोना! और कहां पीतल!" सूरसुन्दर ने राजकुमार को हटाकर ऋषिदत्ता को गोद से चिपटा लिया, "तू मेरी धर्म की बेटी है। मै तुझको देखकर बहुत ही प्रसन्न हूँ। तू ने दोनों कुल को पवित्र कर दिया। ऐसे रत्न खान और समुद्र में कहां मिलते हैं! तेरे साथ बड़ा ही अन्याय किया गया। रुक्मिणी लज्जा से पसीने पसीने हो रही थी और टकटकी बाँध कर उसको देखती रही। घराती बराती दोनों दंग रह गये, "यह लक्ष्मी है या सरस्वती है! दुर्गा है या कोई देवी है! नख सिख से ऐसा सुन्दर रूप ब्रह्मा ने आज तक नहीं बनाया। देवी! तू धन्य है!" उसी समय माली फूलों के टोकरे लाये और सबने उस सुन्दर जोड़ी पर फूल बरसाये। जय जय कार की ध्वनि से भूमण्डल और नभ मण्डल गूँज उठा। राजमहल में नौबत बजने लगी। मन्दिरों में घंटे और शंख बजने लगे। श्रद्धालू जैनी प्रथा तीर्थङ्करों की स्तुति के गीत गाने लगी।

* १२ *

सूरसुन्दर राजकुमार और ऋषिपुत्री को महल में लाया। रानियां लड़की

से गले मिलीं। जो आनन्द सब को प्राप्त हुआ वह लिखने में नहीं आ सकता क्योंकि इस समय आनन्द की देवी साक्षात रूपधारी होकर वहां विराजमान हो गई थी। रुक्मिणी अपनी सौतिया डाह को भूल गई। राजा सबके सामने उसे बहुत ही डांटने लगा परन्तु ऋषिदत्ता ने उसे हाथों के इशारे से मना किया। वह अपने पति (राजकुमार) से कहने लगी, "स्वामी ! प्राणनाथ ! तुमने साधू कों वर देने के लिये बचन दिया था। याद है या नहीं ?"

राजकुमार—"हां प्राण प्यारी ! याद है।"

ऋषिदत्ता—"फिर मैं उसी साधू के मुख से बोलती हूं इस मेरी बहिन रुक्मिणी को गले से लगा लो। राजा ने मुझको अपनी बेटी बनाया है। बड़ी बहिन अपनी छोटी बहिन के दुख को नहीं देख सकती। यदि तुम मुझको प्यार करते हो तो इसको भी अपनी स्त्री बनाओ। मेरे बाप ने मरते समय आपके सामने कहा था "पति की स्त्रियों से प्रेम करना" और मैं बहिन के साथ सच्चा प्रेम करूंगी। मैं तुमको दूसरी रानी देती हूँ और जीवन पर्यन्त तुम दोनों की सेवा करती रहूँगी। मेरे हृदय में कोई अनुचित भाव भी न आयेगा।"

सब के सब दंग रह गये। ऋषिदत्ता स्वर्ग या किसी और ऊंचे मण्डल की देवी है। रुक्मिणी के सर पर पानी के सैकड़ों घड़ा पड़ गये। यह रोती हुई ऋषिदत्ता के पांवों पर गिर पड़ी। उसने उठाकर गले से लगाया और अपने आंचल से उसके आँसू पोंछे। फिर राजकुमार के हाथ में उसका हाथ देकर दोनों के गले मिला दिये, मैं अपनी बहिन का ब्याह आज तुम्हारे साथ करती हूँ। इसके आदर सत्कार में कोई भी कमीं न आने पाये नहीं तो मुझे बहुत ही दुख होगा।"

राजा ने राग रंग का जलूस सजाया। कई दिन तक धूमधाम रही सुलसा को गद्दे पर बिठाकर सारे नगर में उसी प्रकार घुमाया गया। जब ऋषिदत्ता ने यह सुना राजा को समझा बुझाकर उसकी जान बचाई। हां वह उस राज से निकाल दी गई।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

फिर राजकुमार दोनों स्त्रियों को लेकर अपने नगर को लौटा। राह झील के किनारे पहुंचकर ऋषभदेव की पूजा करके अपने नगर में आया। हेमरथ इन सब बातों को पहले ही सुन चुका था। वह कई मील आगे राजकुमार को लेने आया। ऋषिदत्ता से अपने अपराधों से क्षमा करने के लिये प्रार्थना की। प्रेम के साथ सबको राजमहल में ले गया।

* १३ *

इस घटना का राजा के चित्त पर बड़ा ही गहरा प्रभाव पड़ा उसने राज काज राजकुमार को सौंप दिया। पुराने राजाओं के समान जगल में जाकर तप करने और भद्राचार्य का शिष्य हो गया। कनकरथ ने बड़ी उत्तमता और न्याय के साथ राज किया ऋषिदत्ता से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम सिंहरथ रक्खा गया। वह अपनी माँ के रंग रूप का था।

जब सिंहरथ सयाना हुआ एक दिन कनकरथ, ऋषिदत्ता को साथ लिये हुये महल के दरीचे पर बैठा हुआ था। आकाश मण्डल में घने बादल की काली घटायें उमड़ आईं। हवा चली और दम के दम में सब को उड़ा ले गई। कनकरथ बोला, "प्यारी आकाश के बादल हमको उपदेश दे रहे हैं कि मनुष्य जीवन पानी का बुलबुला है। बादल आते हैं जाते हैं। पानी में बुलबुले उठते हैं और फूट जाते हैं। रात को तारे निकलते हैं और सूर्य के निकलते ही छुप जाते हैं। सब कुछ हो गया। अब जीवन को भोग विलास और खेल कूद में बिताना भूल है।" वह दोनों ऋषि के पास गये और उसकी पूजा की वाटिका को उसे भेंट चढ़ाया। फिर अपने समय पर उसी झील के किनारे जाकर तप करने लगे और अपने जीवन को सुफल कर लिया।

—oo—

प्रवचन

परम सन्त परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

होशियारपुर १५-६-७५

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि यह जो तुम काम करते हो क्या किसी को इसका कोई लाभ भी है ? बात यह है दोस्तो मुझे यह नहीं पता कि किसीं को लाभ पहूँचता है या नहीं। मैं साधारण हिन्दू हुं। ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ। परमात्मा, ईश्वर देवी, देवता राम और कृष्ण को मानने वाला था। मेरा भाग्य मेरे कर्म या मौज मालिक मुझे हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई और उन्होंने मुझे यह सन्तमत दिया। इसमें माया-देश, काल देश और दयालदेश के शब्द हैं। क्योंकि इसमें सबका खण्डन है। इसलिये मेरा हृदय इस बात को सहन नहीं करता था। क्योंकि हुजूर दाता दयाल जी महाराज पर मेरा पूरा विश्वास था और मैं उनको तो छोड़ नहीं सकता था। इसलिये मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सचाई से चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। मैं सारा जीवन सचाई से इस लाइन पर चला हूँ और यह काम जो हुजूर दातादयालजी महाराज ने मुझे दिया था। करता हुआ चला आरहा हूँ। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या मेरे इस काम से किसी को लाभ पहुंचा है ? हाँ। शर्त यह कि कोई मेरी वात को समझे—

सब ही आये सतगुरु आगे, दरस न पकड़ा बचन न लागे।
कहो उस सतसंग से क्या फल पाया, वक्त गया और जन्म गँवाया।

आप लोग आ जाते हैं। हुजूर दाता दयालजी महाराज ने मेरी ड्यूटी लगाई थी। उन्होंने तो मेरे बारे में वहुत कुछ लिखा, पता नहीं ठीक है या गलत है। मुझे पता नहीं कि मेरे इस काम से लोगों को लाभ पहुंचा है या नहीं। मैं तो अपना कर्तव्य पूरा कर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

जाना चाहता हूँ। अब आपको शब्द सुनवाता हूँ इन शब्दों ने मर जीवन को बनाया या नष्ट किया और या मुझे भ्रम में डाला।

मैं भूली सतगुरु स्वामी। मैं चूकी अन्तरयामी॥
क्या क्या कहूँ बिथा बखानी। सब जग को पाँउयेन कीन्ह जिज्ञासू।

यह हुजूर महाराज जी का शब्द है। वह सचाई के विज्ञान थे। तबीयत उदास थी। उन्होंने मौलबियों को बुला कर कुरानशरीफ सुना। पण्डितों से वेद और शास्त्र सुने। पादरियों और वेदान्तियों से भी बातचीत हुई लेकिन शान्ति नहीं मिली। तो वह कहते हैं कि मैं भूल गया। इन धर्मवालों ने दिवाना बनाया हुआ था।

ब्राह्मण और भेखन बहु भरमानी।
अभट में पड़े भटक भटकानी॥

उन्होंने भटका खाया हुआ था। अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि क्या इन धर्म वालों ने संसार को भरमाया हुआ नहीं है? हाँ भरमाया हुआ है। जो कुछ किसी को मिलता है या अन्तर में रूप प्रकट होता है वह तो उसका अपना ही आत्मा है। लेकिन आदमी यह समझता है कि देवी आगई, राम आगया कृष्ण आगया या गुरु महाराज आगये। इस बात का ज्ञान मुझे आप लोगों से हुआ।

मैंने संसार में अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कहा है और मैंने ठीक कहा है। कैसे? सुनो। दिल्ली से एक महिला का पत्र आया। वह लिखती है कि बाबाजी! मुझे एक प्रेत आकर बहुत तंग किया करता था। मैंने आपको याद किया। आप आये और आपने मार मार कर उस प्रेत को निकाल दिया। अब प्रेत तो नहीं आता लेकिन किसी किसी समय बाहर से उसकी आवाज सुनाई देती है। अब मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि क्या तू गया था उस प्रेत को निकालने के लिये? नहीं। मुझे तो पता भी नहीं कि वह स्त्री कौन है और नहीं मुझे यह पता है कि उसको प्रेत तंग करता है तो फिर क्या सिद्ध हुआ? जब वहां मैं नहीं था तो वहां प्रेत भी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

नहीं था। इसलिये प्रेत भी उसका अपना ही रूप था और बाबा फकीर भी उसका अपना ही मन था। हमको इन धर्मवालों ने और पंथवालों ने सचाई नहीं बताई और भ्रम में रखा। क्योंकि जीव भ्रम में है इसलिए भटकता फिरता है। आज असाढ़ महीना की संक्रान्ति है। आज से सन्तों का नया साल आरम्भ होता है और मैं भी नई बात ही कह रहा हूँ। लोगों के मेरे पास पत्र आते हैं। वह लिखते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है। लेकिन मैं होता नहीं। तो वह जो यह समझते हैं कि हमारे अन्तर में बाबा फकीर आये या और कोई रूप आया, वह भ्रम में हैं। भ्रम में आकर जीव भटकते फिरते हैं। कोई गंगा जी जाता है, कोई गोदावरीं जाता है कोई मन्दिर जाता है, कोई मक्का जाता है और कोई यूरोश्लाविता जाता है। यह सब क्या है? भ्रम। हुजूर दातादयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि शिक्षा को बदल जाना। क्या शिक्षा वदलूँ? सन्तमत की असली और सच्चीं शिक्षा बता रहा हूँ कि ऐ मानव! तेरा मन हीं तेरा रक्षक है और तेरा मन हीं तेरा भक्षक है। यदि तू अपने मन को ठीक करले तो जैसा तेरा ख्याल होगा वैसा ही तेरा हाल होगा। यह है मेरा असाढ़ मास का सन्देश। मैं जानता हूं कि संसार मेरे स्पष्ट वर्णन को सुनने के लिये तत्पर नहीं है लेकिन मेरा यह कर्तव्य है। कोई सुने या न सुने या कोई अमल करे या न करे। मुझे इस बात की परवाह नहीं है। जिस प्रकार का विचार किसी को दे दिया जाता है। यदि वह उसे ग्रहण कर लेता है तो उसका जीवन बन जाता है। तो मैंने आप लोगों को सिद्ध कर दिया कि धर्म और पंथ वालों ने हमको भ्रम में डाला हुआ है—

मारग जो सींधा दीन्ह छिपाती।
तीरथ और वरतन मांहि भुलावो।'

सींधा मार्ग तो छुपा दिया और सचाई नहीं बताई। सचाई क्या है? कि जो कुछ तुमको मिला है, मिल रहा है या मिलेगा,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

वह तुम्हारे अपने हीं कर्म और विचार का परिणाम है। घृणा क तो घृणा मिलेगी, प्रेम करोगे तो प्रेम मिलेगा, सहानुभूति करोगे तो तुमसे दूसरा सहानुभूति करेगा, द्वेष करोगे तो द्वेष मिलेगा, हानि करोगे तो हानि होगी और किसी की सहायता करोगे तो तुम्हारी सहायता होगी। यह है सीधा मार्ग। बजाय इसके कि मन्दिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों में उसकी तलाश करो। अपने अन्तर अपने मन में तलाश करो वाहर मालिक नहीं है।

आज कल क्या होरहा है? भाई को भाई से घृणा। वाप बेटे की आपस में शत्रुता, पति पत्नी की आपस में द्वेष घृणा और राजनैतिक पार्टियों की एक दूसरे के विरुद्ध घृणा द्वेष।

इन सब के घृणा के विचार देश में तबाही लादेंगे। तुम्हारा अपना हीं विचार डुबो देता है और तुम्हारा अपना ही संकल्प तार देता है। हुजूर दाता दयालजी महाराज की आज्ञानुसार शिक्षा को बदल रहा हूं और साथ हीं प्रमाण भी दे रहा हूँ। कोई महात्मा ऐसी सचाई नहीं बताता। सब तुम्हें अपने जाल में फँसाते हैं। तुम भ्रम में हो और इस जाल में आनन्द लेते हो। मैं अपनी जिम्मेदारी को समझता हूँ। मेरे सिर पर ऋण है। गुरु ऋण है। इसलिये यह काम करता हूं अन्य था मैंने क्या लेना है इस झमेले से। जिस प्रकार का किसी स्थान का वातावरण होता है या जिस प्रकार के किसी जगह विचार फैले हुए होते हैं। व्यक्ति उनके प्रभाव में आ जाता है! रेलवे मण्डी में भृगुसंहिता वालों के यहां कोई बीमार है। उन्होंने इस विचार से रामलीला करवाई कि यह स्वस्थ हो जायेगा। जब रामचन्द्रजी की बरात वापिस जाने लगी और सीताजी रोने लगीं तो उस समय जितने आदमी और स्त्रियां वहां मौजूद थे सब बहुत रोने लगे और काफी समय तक रोते रहे। अब आप सोचो कि असल में न वहाँ सीता है, न राम है, न राजा जनक हैं और नहीं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

में मोरछल देता है और एक हाथ अपना लगाता है और लोगों को मोरछल Touch करते हैं। तात्पर्य यह है कि आदमी का विश्वास काम करता है। जो श्रद्धा और विश्वास से जाता है। उसका काम हो जाता है। दूसरे का नहीं होता। संसार है क्या ? सब भ्रम का जाल है। प्रवृत्ति मार्ग में विचार सहायता करता है। हुजूर दाता-दयाल जो महाराज पर मेरा विश्वास है। इसलिये मेरा प्रवृत्तिमार्ग भी ठीक है और निवृत्ति मार्ग भी ठीक है। आप लोग सत्संग में आये हो। सत्संग से क्या मिलता है ? ज्ञान, विवेक और भेद। क्यों भटका खाते हो। एक जगह विश्वास रखो। तुम्हारा विश्वास और सच्चा प्रेम तुम्हारे सारे काम करेगा। जानता हूँ कि गृहस्थियों को निवृत्तिमार्ग की आवश्यकता नहीं। जो भी आता है प्रवृत्ति के लिये आता है। मेरे पास पचास-पचपन वर्ष की दो स्त्रियां आईं। जिनको मासिक धर्म भी नहीं आता था। मुझसे प्रसाद लेगई। बच्चे होगये। किसने दिये ? उनके विश्वास ने। यदि मुझे यह पता होता कि उनको मासिक धर्म नहीं आता तो शायद मैं उनको प्रसाद भी न देता। सेठ मोतीलाल की स्त्री को डाक्टर ने कहा था कि तुमको बच्चा नहीं हो सकता। मुझसे प्रसाद लेकर सीधी डाक्टर के पास गई और कहने लगी कि यह देखो बाबाजी ने मुझे प्रसाद दिया है। अब मुझे लड़का होगा कोई शक्ति मुझको रोक नहीं सकती। उसका विश्वास था। लड़का होगया। इसलिये एक जगह विश्वास रखो और यदि पार जाना चाहते हो तो किसी सत्पुरुष की संगत में आओ और उसके बचन सुनकर उन पर अमल करो।

उलटे गिर भौजल गोता खानी।
यह साधन पिछले हुए पुरानी॥

वे फरमाते हैं कि पिछले समय के साधन अब काम नहीं आते। क्योंकि जीव मन के चक्कर में हैं। मन के साधन से संसार तो बन जायेगा। लेकिन मन के चक्कर से छुटकारा नहीं होगा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

स्रुति स्मृत व्यास आदिक करें बखानी।
यह साधन मुक्ति निमित न जानो ॥

यह साधन मुक्ति नहीं दे सकते। हाँ। इनसे तुम्हारा संसारिक जीवन सुखी हो जायेगा। हम मोक्ष की इच्छा क्यों करते हैं? क्योंकि इस संसार में सुख नहीं है। आप श्रीमती इन्दिरा गाँधी की दशा देखो कितना ऊँचा स्तर था और अब कितनी बदनामी हो रही है। इस संसार की हर एक वस्तु में तब्दीली होती रहती है। आज सुख है तो कल दुख है। आज मान है तो कल अपमान है। आज प्रशंसा है तो कल को बुराई भी होगी। लेकिन संसारी लोग इसमें दुख उठाते हुये इससे निकलना नहीं चाहते। इसलिये सन्तमत की शिक्षा सबके लिए नहीं है। सन्तमत उनके लिये है जो इस चक्कर से निकलना चाहते हैं। एक आदमी गुरु के पास यह इच्छा लेकर जाता है कि मैं इस भव के चक्कर से निकल जाऊँ और साथ ही बेटे, पोते ओर दोहते माँगता है। तो इससे क्या सिद्ध हुआ? कि इसकी निवृत्ति की इच्छा झूठी है यदि सच्ची होती तो वह बेटे, पोते और दोहते न मांगता। हम लोगों को जब किसी काम से हानि होती है तो अपने बच्चों को यह शिक्षा देते हैं कि यह काम मत करना। स्वयं तो फिर भी किये जारहे हैं। तो आप बताइये बच्चे कैसे न करेंगे। गुरु के पास जाकर जो आदमी प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों वस्तुयें मांगता है तो समझो कि यह धोखेबाज है। उसको निवृत्ति की आवश्यकता नहीं है। उसको मुक्ति नहीं मिल सकती। मैं तो कहूंगा कि इस समय सन्तान पैदा करने वाले दोषी हैं। क्योंकि स्वयं तो फँसे हुए हैं उलटा और रूहनों को बुलाकर फँसा रहे हैं। मैं क्योंकि निवृत्ति चाहता था और इस चक्कर से निकलना चाहता था। इस-लिये मैं इस ओर आया। अब भी निकलना चाहता हूँ। पता नहीं मेरा परिणाम क्या होगा। पिछले दिनों में बीमार होगया था, बोल नहीं सकता था, मिलना मिलाना बन्द था। आपने मेरी दशा देखी

होगी । सन्तमत उनके लिए है जो चक्कर से निकलना चाहते हैं । मैं अपने आपसे प्रश्न करता हूं कि इस मार्ग पर चलने से क्या तुम जन्म मरण से बच सकते हो ? यदि मरते समय मेरा मन किसी विचार या किसी जगह न गया हो तो बच जाऊँगा और यदि मेरा मन किसी जगह अटक गया, हजूर दातादयाल जी महाराज के साथ या बाल बच्चों के साथ लग गया तो फिर दूसरा जन्म लेना पड़ेगा । जो लोग यह समझते हैं कि गुरु से नाम ले लो और उससे प्रेम करो वह अन्त समय आकर तुम्हें ले जायेगा और निवृति हो जायेगी और आवागवन समाप्त हो जायेगा । वह विल्कुल भूल में है और धोखे में है । यदि अन्त समय पर बाबा फकीर कोई और गुरू या कोई देवी देवता आगया तो दूसरा जन्म अवश्य मिलेगा । यह और बात है कि वह जन्म किसी अच्छे कुल में हो या ऊपर के लोकों में हो । मगर होगा अवश्य । यह साफ साफ इसलिए कह रहा हूं कि जो लोग मुझे गुरु मानते हैं वह धोखे में न रहें और मुझे गुरु वनने का कोई पाप न हो मेरी बात को समझकर यदि अपनी सुरत को प्रकाश और शब्द में लगाओगे तब आवागवन समाप्त होगा वरना नही । यदि मैं स्पष्ट वर्णन नहीं करता तो एक तो दोषी हूं और दूसरे तुम लोगों का अकाज होगा । यदि मेरा अनुभव ठीक है तो जिन गुरुओं ने सचाई नहीं बताई और लोगों को अज्ञान में रखकर धन धान्य और भाव प्रतिष्ठा लिए और अपने डेरों और अपने लिए धन इकट्ठा किया उनकी क्या दशा होगी । यह आप लोग अनुमान लगाये । हजूर महाराज जी ने अपनी प्रेम–बाणी में साफ लिखा है कि अन्त समय पर फिलम चलती है । गुरु भी आ जाता है । सतसंग भी सुना देता है । उस जीव को ऊपर के लोकों में जन्म मिलना है । वहां उसको गुरु के दर्शन भी मिलते हैं । फिर जव कोई समय का सन्त सतगुरु इस संसार में आता है तो वह जीव भी यहां आकर शेष कमाई पूरी करके वापिस अपने आदघर पहुँच जाता है ।

॥ मनुष्य बनो ॥

मुझे लोगों के प्रतिदिन पत्र आते हैं और कई आदमी … आकर बताते हैं कि बाबा जी ! आप प्रकट हुये यह किया और वह किया। लेकिन मैं उनसे साफ कह देता हूँ कि भई ! तुम्हारे अपने ही विश्वास और विचार का खेल है। मैं कहीं नहीं जाता। जब मैं जीवित बैठा हुआ किसी के अन्तर नहीं जाता तो कैसे मानूँ कि यह मरे हुये गुरु आकर किसी को ले जाते हैं। यह सब धोखा है। सन्तमत जिस उद्देश्य के लिये संसार में आया था वह अब लोप हो गया है। इसलिये प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया। इसलिए मैं यह आप लोगों को कहना चाहता हूं कि यदि निवृति चाहते हो तो अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द को प्रकट करो और यदि प्रकाश और शब्द प्रकट नहीं होता तो जिसको तुम गुरु मानते हो उसको शब्दस्वरूपी मानो। फिर हो सकता है कि तुम्हारा बेड़ा पार हो जाये। यही शास्त्र कहते हैं।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देव महेश्वरम्।
गुरु साक्षात परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

उन्होने यह नहीं कहा कि गुरु बाबा फकीर है या हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज हैं। एक महिला है, एक आदमी उसको अपनी बीवी मानता है, किसी ने उसको माता माना हुआ है। इसलिए सबके मान भिन्न भिन्न हैं। इसलिए जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके अपने ही भाव और विश्वास का फल मिलता है। इसलिए कहा गया है।

गुरु को मानुष मानते, सो नर कहिए अंध।
दुखी होये संसार में, आगे जम का फन्द ॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहीं।
कहें कबीरता दास को, तीन ताप भरमाहीं ॥

जो आदमी यह समझता रहेगा कि उसका गुरु बाबा फकीर है। होशियारपुर में रहता है और मानवता मन्दिर का संस्थापक है। उसको दूसरा चोला अवश्य मिलेगा। मेरे जिम्मे कर्तव्य है। इसलिए स्पष्ट

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

वर्णन करता हूँ और अपनी आत्मा को साफ रखकर ले जाना चाहता हूँ। जो आदमी कुछ बनता है उसको उस बनने का दण्ड अवश्य मिलता है। जो आदमी गुरु बनकर सचाई नहीं बताता उसको भी दण्ड मिलेगा। कर्म के चक्कर से कोई नहीं बच सकता। वो दो मार्ग हो गये। एक प्रवृति और दूसरा निवृति।

निवृति साधन यूँ कह भाई, कलजुग में एक नाम निशानी।

कलजुग में केवल नाम है।

कली केवल एक नाम अधारा।
स्रुति स्मृति सन्तमत सारा ॥

लेकिन संसार राधास्वामी, राधास्वामी, राम राम, कृष्ण, कृष्ण, ओम् या गायत्री को नाम समझता है। यह नाम नहीं है। यह नाम को प्राप्त करने की पीढ़ी है।

नाम रहे चौथे पद माहीं, यह ढूढ़े तिरलोकी माहीं।

मुझे इस नाम का पता नहीं लगता था यद्यपि मैं हुजूर दातादयाल जी महाराज से इतना प्रेम करता था। नाम का पता मुझे आप लोगों के अनुभवों से लगा।

सतगुरु सेवा सतसंग ठानी, अब निर्विति पर जिनका मानी।

निवृति मार्ग के लिए सतगुरु की सेवा और उसका सतसंग आवश्यक है शर्त यह है कि कोई सतगुरु हो। तुम उसको सतगुरु समझते हो जिसका रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है। दिवानों! तुम दस नम्बर के बदमाश को गुरु प्रसिद्ध कर दो! उसका रूप लोगों के अन्तर प्रकट होना शुरू हो जायेगा। तुम भूल में हो। हजूर दातादयाल जी महराज का रूप मेरे अन्तर प्रकट होता था। जितना मै उनसे प्रेम करता था वह उतना ही मुझे फटकारा करते थे। गुरु नाम है सच्ची समझ और सच्चे विवेक का। जिससे भी तुमको ज्ञान मिल जाये तुम्हारे लिए वही गुरु है। यहाँ तक तो मैं गुरुमत को मानता हूँ, शेष सब रोचक भयानक और चक्कर है।

तिन जीवन प्रति कहूँ बुझानी, सतगुरु पूरा खोज।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि सतगुरु खोजो। तुम उसको सतगुरु समझते हो जिसने मानवता मन्दिर बनाया हुआ है या कोई डेरा बनाया हुआ है। जिसने दाढ़ी बढ़ाई हुई है और जिसके दस बीस हजार चेले हैं। गुरु नाम है अनुभव, ज्ञान और विवेक का। तुम लोग कोई निवृति के लिए और कोई प्रवृति के लिए आये हो। जो कुछ चाहते हो, उसकी प्रबल इच्छा रखो। क्योंकि आदमी को अपने ऊपर विश्वास नहीं होता इसलिए कोई न कोई सहारा लेना पड़ता है। तुम्हारी इच्छा है राम, कृष्ण, देवी या देवता का सहारा लो मगर एक का सहारा लो और उसको पूर्ण मानो। तुम्हारे सारे काम होते रहेंगे। मेरे होते रहते हैं। मैं जब राम या कृष्ण को पूजता था तो मेरे साथ ऐसे क्रश्में होते थे जिनका कोई अनुमान नहीं। सिद्धि शक्ति भी बहुत थी। आज से सन्तों का नया साल शुरू होता है। इसलिए सन्तों के मार्ग का संदेश दे रहा हूं। हजूर दातादयाल जी ने मेरे नाम लिखा है।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगाके, ले जा गुरु के देसा ।।
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निवल अवल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।।

मैं जो वचन कहता हूं वही मेरा नाम है। मैं लोगों को बन्द कमरे में बैठाकर उनके कान में फूंक नहीं मारता। यद्यपि फूंक मारना भी किसी सीमा तक ठीक है। मगर यह उनके लिए है जिनकी बुद्धि अभी विकसित नहीं हुई। इससे उनका विश्वास बैठ जाता है। मैं इसका खण्डन नहीं करता क्योंकि लोगों का विश्वास बँधाया जाता है। हजूर दातादयाल जी महाराज विश्वास बंधाने के लिये कहा करते थे कि एक दिन का व्रत रखो ताकि पता लग जाये कि इसको सचाई की इच्छा भी है या कि नहीं। दूसरे व्रत रखने से किसी हद तक मन निर्मल हो जाता है। मैं व्रत के विरुद्ध नहीं हूँ। लेकिन यह सबके लिये नहीं है। यह तो लगन की आवश्यकता अनुसार होता है। निवृति मार्ग के लिये सबसे बड़ी बात

पूरा गुरु और उसका सतसंग है।

जब तक पूरा मिले न मिलानी। तब लग खोजत रहे जहानी।

जब तक पूरा गुरु नहीं मिलता, खोज करते रहो। सतसंगों में जाकर वाणी और बचन सुनो, मगर यूँ ही किसी को गुरु मत बनालो।

गुरु कीजिए जानकर पानी पीजिए छानकर।

आजकल सतसंगी क्या करते हैं कि अपने आप को शायद कुछ मिला है या नहीं। लेकिन दूसरों को वरगलाकर और सहज बाग दिखाकर ले जाते हैं और नाम दिला देते हैं। यह उनके अन्तर एक जनून होता है कि दूसरों को नाम दिलाना पुन्य होता है और कई जगह तो नाम दिलाने के लिए एजेन्ट रखे हुये होते हैं और उनको डेरों की ओर से प्रति व्यक्ति कुछ दिया जाता है।

खोजन में जो दिवस बितानी। वह साधन मैं कथा न जानी॥

खोज करने में भी तुम्हारा जितना समय लगा है, वह भी तुम्हारा साधन है। वह समय भी व्यर्थ नहीं गया।

संतगुरु पूरे जभी मिलानी, प्रेम प्रीति से सेवा आनी।

जब गुरु पर विश्वास आ जाये तो फिर उसकी सेवा करो। धन धान्य देना ही गुरु की सेवा नहीं है। तन मन और रूह देना ही गुरु की सेवा असली सेवा है। आज्ञाकारी बनो। स्वामी जी महाराज ने हजूर महाराज को आज्ञा दी कि यहाँ दीवार बना दो। उन्होंने बनवा दी। स्वामी जी महाराज ने देखी तो आज्ञा दी कि इसको गिरा दो। हजूर महाराज जी ने गिरा दी। लेकिन यह प्रश्न नहीं किया कि क्यों गिरा दी जाये अर्थात गिराने का कारण ज्ञात नहीं किया। सिख गुरुओं के इतिहास में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं। गुरु की आज्ञा मानो और विश्वास रखो। विश्वास से काम बनता है। मैं क्या करता हूँ? यह गुरु की आज्ञा ही तो है, जो मैं यह काम कर रहा हूँ। कोई सुने या न सुने या इस मेरे काम का क्या परिणाम हो मुझे इस बात की परवाह नहीं है। मैंने जो समझा और जो अनुभव

किया वह कहता हूं। गलत है या ठीक है इसका मुझे पता नहीं मगर मेरी नीयत साफ है। तो यह है गुरु की सेवा।

तब गह भेद नाम दे दानी।
नाम जुगत जुगती तुम रहो कमानी ॥

जीव से Test करने के बाद गुरु जब उसको अधिकारी समझते थे तब कुछ बताते थे। लेकिन आजकल तो प्रातः जाओ सवा रुपया दो और नाम लेकर सायं को घर आ जाओ। आजकल तो स्थान स्थान पर इश्तहार लग जाते हैं कि अमुक दिन नाम दिया जायगा। नाम देने के लिये ढढोरे पीटे जाते हैं। सुनो! एक आदमी अपने दो लड़कों को गुरु के पास ले गया। गुरु ने दोनों को ही दो कबूतर दिये और कहा कि इनको ऐसे स्थान पर ले जाकर मारो जहां कोई देखता न हो। एक लड़का तो कबूतर को मकान के पीछे ले गया। इधर उधर देखा कि कोई आदमी देख तो नहीं रहा है और कबूतर को मार दिया और वापिस आ गया। दूसरा लड़का कबूतर को वापिस ले आया। पहले लड़के से गुरु ने पूछा कि तुमने कबूतर को कहां मारा, उसने कहा कि इस मकान के पीछे। कोई देख तो नहीं रहा था? जी नहीं। दूसरे से प्रश्न किया कि तुमने कबूतर को क्यों नहीं मारा? उसने कहा कि महाराज! मैं जहां भी गया, वहाँ यदि कोई आदमी नहीं भी देखता तो सूर्य, आकाश, वायु वृक्ष और पृथ्वी देख रहे थे। मुझे कोई ऐसा स्थान नही मिला जहां कोई भी न देखता हो। इसलिए मैं कबूतर को वापिस ले आया हूं। गुरु ने कहा कि तुम अधिकारी हो और मेरे पास रहो और दूसरे लड़के को वापिस कर दिया। इसलिए परमार्थ सबके लिए नहीं है। हम गुरुओं ने अपने डेरों को प्रसिद्ध करने के लिए जो भी आया उसको नाम दे दिया। अब इसका परिणाम आप लोगों के सामने है। मैं इसीलिए किसी को नाम नहीं देता। लेकिन लोग ले जाते हैं। "नाम दिया नहीं जाता नाम लिया जाता है। कमालपुर वाली माई, कृषक या दयालदास को मैंने नाम नहीं दिया यह ले गये। उन्होंने मेरी बात पर विश्वास किया और सफल हो गये।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

पहले दाता शिष भया, जिन तन मन अरपा सीस ।
पीछे दाता गुरु भया, जिस नाम दिया बख़शीश ॥

पहला दानी चेला है जो गुरु को अपना तन मन और धन अरपन करता है फिर उसको गुरु नाम देता है ।

नाम प्रताप मुक्ति गति पानी । बिना नाम नहिं ठोर ठिकानी ॥

हमारी सुरत जब प्रकाश और शब्द को पकड़ेगी तब मुक्ति मिलेगी । मैंने नाम को तो पकड़ा मगर मुझे ज्ञान नहीं था । मैं मद के चक्कर में आ जाता था । इसलिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था । मैं न गुरू हूँ न महात्मा हूं । मैं न कुछ करता हूँ न ही किसी को कुछ देता हूं । यदि तुम्हारा विश्वास है तो सब कुछ हो जाता है । शायद दूसरे महात्मा कुछ करते हों । लेकिन मैं कुछ नहीं करता । मैं दूसरे के विचार को शक्ति देता हूँ और यह बिलकुल सचाई है । मुझे प्रतिदिन लोगों के पत्र आते रहते हैं कि आप आये और यह कर दिया और वह कर दिया । मैं अपने आप से पूछा करता हूँ कि क्या तुम कुछ करते हो ? नहीं । हजारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं, मुझे कोई पता नहीं होता । लोगों का अपना विश्वास है और विश्वास से ही वह कुछ ले जाते हैं । कोई आपको सचाई नहीं बताता सब अपने जाल में फंसाते हैं । मेरे स्पष्ट वर्णन से हानि भी है । एक तो यह कि लोगों का अज्ञान का विश्वास टूट जाता है और दूसरे पैसा नहीं आता । लेकिन पहले अपना आप फिर माई और बाप । मुझे तुम्हारा अज्ञान का विश्वास प्यारा नहीं है । निवृत्ति के लिए प्रकाश और शब्द को अपना इष्ट बनाओ ताकि अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये और संसार से तुम्हारा सम्बन्ध टूट जाये ।

मेरा तो आप लोगों ने बेड़ा पार कर दिया । दूसरे गुरु क्या करते हैं ? उनका रूप भी लोगों के अन्तर प्रकट होता है । यदि वो उसकी कही हुई बात सच हो गई तो फिर तो वह दूसरे आदमी के सामने लॉडस्पीकर रख देते हैं ताकि और लोग भी यह समझें कि हमारा गुरु बहुत करने वाला है और यदि वह बात गलत निकले तो कह देते हैं कि

भई मैं नहीं था वह तो काल था । मैं तो कहता हूँ यह किसी के वि नहीं कहता । मैं तो सच्चे गुरुमत का प्रचार कर रहा हूँ और गुरु आज्ञावश अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूँ । यदि तुम यह समझते हो कि मैं भूल में हूं तो मत आओ मेरे पास । हजूर दातादयाल जी महाराज ने मुझे यह काम करने की आज्ञा दी थी और हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि फकीर ! निर्भय होके काम करो । मैं तुम्हारा संरक्षक रहूँगा । इसलिए यदि मैं भूल में हूं तो मैं दोषी नहीं हूँ । क्योंकि जिन्होंने मुझे यह काम करने की आज्ञा दी थी वह भी आंख वाले थे । मैं सचाई बताने से टल नहीं सकता । तुम्हारी इच्छा हो मेरे सतसंग में आओ या न आओ ।

कलजुग में बिन नाम निशानी, मुक्ति न होगी निश्चय ठानी ।

अन्त समय पर जिस ओर विचार जायेगा वहाँ ही जन्म मिलेगा । इसलिए मन से परे जाओ और नाम को पकड़ो ताकि आवागवन समाप्त हो जाये । संसार तो मुँह से जोर जोर से नाम जपता है और माला फेरता है । वह नाम का जपना क्या है । लेकिन प्रारम्भ में किसी सीमा तक वह भी ठीक है । गरुड़ पुराण कहता है कि जब तक पारब्रह्म और शब्दब्रह्म में नहीं जाओगे आवागवन समाप्त नहीं होगा और सन्तमत की शिक्षा है । इसलिए सनातन धर्म और सन्तमत में कोई अन्तर नहीं है । सन्तमत ने उसकी विस्तृत व्याख्या की है ।

करनी धरनी जोगी ज्ञानी । यह सब मिल रहे मन की धानी ॥

कर्म करने वाले धर्मी, जोगी और ज्ञानी सब मन के चक्कर में हैं । देखो ! तुम बाबे फकीर का ध्यान करते हो । यह तुम अपने ही मन का ध्यान करते हो । किताबें लिखने वाला भी मन से ही किताबें लिखता है । दानी को यदि दान के फल की इच्छा है तो उसको भी जन्म लेना पड़ेगा । इसलिये दान निष्काम होना चाहिये । दान भी हमारा Rutine अर्थात प्रदिदिन का स्वाभाविक काम होना चाहिये

तब दान बन्धन का कारण नहीं होगा। यदि निवृति के विचार से तुम दान देते हो तों तुम भूल में हो। फिर भीं कुछ न कुछ तो मिलेगा। दोगे तो मिलेगा यदि दोगे नहीं तो मिलेगा क्या। इसलिये किसी दुखिये की सहायता करो।

सतगुरु सन्त मिले नहिं आनी।
भूले पढ़ पढ़ पिछली बानी॥

जब तक कोई सन्त सतगुरु नहीं मिलेगा तुम भूल में रहोगे। इसलिये

सब से करी काल ठगदानी।
संत बिना कोई बचे न बचानी॥

यह है कालमत ओर दयालमत का भेद। काल तुम्हारा मन है। यदि कोई काल के जाल से निकलना चाहता हैं तो मन से ऊपर जाये। जिन लोगों ने मुझे यह कहा कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होकर उनके काम करता है। मैं उनका धन्यवादी हूं। क्योंकि मैं तो होता नहीं। इसलिये मुझे विश्वास होगया कि मैं तो जाता नहीं। कौन करता है उनके काम ? उनका मन। इन लोगों के अनुभवों ने मेरी आँख खोल दी। हुजूर दाता दयालजी महाराज ने वहुत दया की जो मुझे यह काम दिया अन्यथा मुझे यह अनुभव न होता। अव मैं यत्न करता रहता हूं कि मन में न फँसू। जब तक जीवन है मन तो रहेगा। लेकिन मैं इसके रूप को समझ गया हूं। इसलिये मन में रहो। सारे खेल खेलो मगर मन में फँसो नहीं।

बिरले सन्त नाम गति गानी !
चौथे लोक चढ़ पता जमानी॥

किसी बिरले सन्त ने ही नाम की महिमा गाई है अन्य था कोई राधास्वामी गाता है, कोई राम राम गाता है, कोई नाम का सुमिरन करता है। यह नाम नही यह तो नाम तक जाने का साधन है। जब तक शरीर मन और रूप से परे नहीं जाओगे तब तक असलियत

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

का पता नहीं लगता।

राधास्वामी कहा भेद सब जानी।
उनकी दया से बहु पुनि जानी ॥

स्वामीजी महाराज ने हुजूर महाराज जी को यह भेद दिया और मैंने आप लोगों की दया से इस भेद को पाया है। इस भेद को सब ने परदे में रखा। समयानुसार उन्होंने अच्छा किया। मैं यह नहीं कहता कि उन्होंने भूल की।

गर्भ मिटा नहिं नाम दिवानी।
आरत उनकी सजूँ सजानी ॥

गुरु ने भेद दिया। भ्रम मिट गया। अब अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द का साधन करता हूं। आज का शब्द है काल देश माया देश और दयाल देश का भेद। माया देश हमारा विचार है, काल देश हमारा मन है और दयालदेश मन से परे की अवस्था है।

मैं कहूं कौन से भाई, कोई मेरी नजर न आई ॥

मैं जो कुछ कहता हूँ और जो भेद मैंने खोला है कोई भी मेरे साथ मेल करने वाला नहीं है। ऐसे स्वामी जी महाराज कहते हैं कि कोई भी मेरे साथ मेल करने वाला नहीं है।

जो बात सन्त बतलाई, कहूँ से मेल न खाई ॥

जो कुछ मैंने कहा है, किसी ने भी ऐसी बात नहीं बतलाई। जिन्होंने बात को खोलकर नहीं कहा, निस्सन्देह जानते होंगे मगर परदा रखा और रोचक बातें कहीं।

तिरलोकी सभी सुनाई, चौथे का मर्म न गाई।
जिन चौथा लोक जनाई, सो अचरज करते भाई ॥

अब तुम सोचो कि तुम लोगों से जब से मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि मेरा रूप तुम लोगों के अन्दर जाता है और तुम्हारे काम करता है लेकिन मैं नहीं होता। तो फिर मैं आगे जाने के लिए विवश होगया। मैं तो आद घर जाना चाहता था। यदि मुझे संसार

के मान प्रतिष्ठा की आवश्यकता होती तो मैं भी बात को परदे में रखता और लाखों का मालिक होता। मगर मैं मान प्रतिष्ठा लेने के लिये गुरुमत में नहीं आया था। मैं तो अपने असली घर जाने के लिये आया था। अब प्रकाश और शब्द में उस चीज की तलाश करता रहता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। जब तक वह वस्तु मौजूद है तब तक मेरा आना जाना समाप्त नहीं होगा। यह और बात है कि वह वस्तु शरीर में या स्थूल में न आवे, मन में चली आये, सतलोक में चली जाये, या इससे भी ऊपर के लोकों में चली जाये। लेकिन जब तक वह है तब तक तो वह कहीं न कहीं अवश्य ठहरेगी और जब तक वह कहीं ठहरेगी तब तक आवागवन है। आवागवन बुरा शब्द नहीं है। आवागवन है आना ओर जाना। सतलोक की किरणें भी यहां आई हुई हैं। उनका भी आवागवन है। तो जब मैं उस वस्तु की खोज करता हूँ तो कोई हवस नहीं रहती। मेरी हस्ती समाप्त हो जाती है और अंश पूर्ण में मिल जाता है। बुलबुला पानी में मिल जाता है। यह मेरी खोज है और कबीर साहिब ने भी निज धाम के बारे में यही कहा है—

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहँ पूरन पुरुष हमारा।
जहँ नहिं सुखदुख साँच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा॥
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उजियारा।
नहिं तहाँ ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, वेद कितेब न बानी॥
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब जहाँ हिरानी!।
घर नहिं अधर न बाहर भीतर पिंड ब्रह्मंड कछु नाहीं।
पाँच तत्व गुन तीन नहीं तहँ, साखी शब्द न ताहीं?।
मूल न फूल बेल नहिं बीजा, बिना वृक्ष फल सोहै।
ओअं सोहं अर्ध उर्घ नहिं, स्वासा लेख न कोहै॥
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई; नहिं सूक्ष्म अस्थूल।
नहिं अच्छर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के मूल॥
जहाँ पुरुष तहँ ना कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना

हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरवाना ॥

तो जहां शेष कुछ नहीं रहता है वहाँ अपनी हस्ती को खोकर अपने निज स्वरूप में मिल जाना है। यह मेरे जीवन का परिणाम है। मैं गुम लोप होने का यत्न करता रहता हूँ। पता नहीं मेरा क्या परिणाम होगा।

कोई माने न बहुत मनाई, अब क्योंकर करूँ लखाई॥
मैं समझ यही चित लाई, बिन मेहर न सरधा आई॥

जब तक मालिक की दया नहीं होती कोई इस ओर नहीं आता। असलाह उसकी हो सकती है जो अपनी असलाह करना चाहता है। लोग कहते हैं कि जिस पर सन्त हाथ पैर देते हैं उसकी आदतें बदल जाती हैं और वह अच्छे काम करने लग जाता है। लेकिन क्या सन्तों के लड़कों ने कभी कोई बुरा काम नहीं किया ? क्या सन्तो के घरों में लड़ाई झगड़े नहीं होते थे ? संसार भूला हुआ है। क्या सन्त चाहते थे कि उनके लड़के कोई बुरा काम करें या उनके घरों में लड़ाई झगड़ा रहे ? नहीं। इसलिये ठीक वह हो सकता है जो ठीक होना चाहे। जो अदमी ठीक होना नहीं चाहता सन्त उसको क्या करेगा। संसार भूला हुआ है। आप लोग सतसंग में आये हैं। सतसंग से सच्ची समझ मिलती है। लेकिन यदि आप सतसंग को एक तमाशा समझ कर आये हैं तो आपको सच्ची समझ कैसे मिलेगी ? सच्ची समझ तो उसको मिलेगी जो सच्ची समझ प्राप्त करने के लिये सत्संग में आता है। परमार्थ तो दूर रहा यदि तुम अपने संसार को अच्छा बनाना चाहते हो तो अपने मन को ठीक करो क्योंकि जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी करनी वैसी भरनी और जैसी मति वैसी गति का उसूल काम करता है। मैं गृहस्थियों के लिये आया हुं। अपने मन पर सवारी करो। यदि तुम किसी के साथ धोखा करोगे तो तुम्हारे साथ भी धोखा होगा। यदि किसी को गाली दोगे तो तुम्हें भी गालियां मिलेंगीं—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आवत गाली एक है, उलटत हुये अनेक।
कहै कबीर न उलटिये, रहै एक की एक ॥

निवृति का और मार्ग है और प्रवृत्ति का और मार्ग है। किसीका बुरा मत चाहो। यदि तुम्हारी नीयत ठीक है तो दूसरा आदमी यदि तुम्हारा बुरा भी सोचेगा तो उसको कुछ नहीं होगा और वह स्वयं फँस जायेगा। दुख और सुख अपने ही कर्म से मिलता है।

मेरे पिताजी की आदत वहुत सख्त थी। जब बूढ़े होगये तो गांव में रहते थे। बिरादरी वाले उनको वात बात पर तंग करने लगे। उन्होंने मुझे पत्र लिखा। मैंने उनका पत्र ओर कुछ अपनी ओर से लिख कर दाता दयालजी महाराज को भेज दिया। उन्होंने मुझे जो उत्तर दिया वह सुनो—

कोई सुख दुख का नहीं दाता, तेरी ही है भूल सब।
करम अपने करते हैं अनुकूल और प्रतिकूल सब ॥
करम की प्रधानता की क्या नहीं तुझको समझ।
कर्म से आनन्द हैं और करम ही है सूल सब ॥
यह जगत है वाटिका करते हैं प्राणी आके काम।
कर्म के अनुसार इनके कांटे हैं और फूल सब ॥

सव अपने ही कर्म का फल भोगते हैं और बहाना दूसरे का बन जाता है। कोई किसी को दुख नहीं देता।

जो ठगेगा वह ठगा जायेगा निस्संदेह आप।
प्रमी जब ही पाते हैं ओर प्रेम के बहु मूल सब ॥
अपनी करनी आप भरनी पड़ती है संसार में।
अपने घर की आप उठाया करते ही हैं चूल सब ॥
किस भरम में तू पड़ा औरों की बातें छोड़ दे।
काम में लग अपने करले करम अनुकूल सब ॥

इसलिये मैंने गुरु पदवी पर आकर अपने घर में या किसी दूसरे के साथ कभी हेराफेरीं नहीं की। तुम लोगों के साथ भीं सदा सचाई

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

का व्यवहार करता हूं, कभी किसी के साथ धोखा नहीं करता। गु- तो मैं हूँ ही और सत्गुरु है सच्चा ज्ञान। देखो! एक डाक्टर के पास एक बीमारी की बहुत लाभ दायक दवाई है और लोगों को उसकी दवाई से लाभ पहुंचता है। लेकिन यह हो सकता है कि वह डाक्टर स्वयं उस बीमारी का रोगी हो या उसको वह बीमारी हो जावे। मगर उसकी उस दवाई से लोगों को तो लाभ पहूँचता है। तुम गृहस्थ हो आपतो निजी स्वार्थ के लिए किसी को तंग मत करो और नहीं किसी से हेराफेरी करो। किसी दुखिये और गरीब की सहायता करो।

राधास्वामी नाम भज झगड़ों से बच कर रह सदा।
जो नहीं समझा तो पढ़ना लिखना होगा धूल सब ॥

यह उन्होंने मुझे लिखा है कि तुम किसी से झगड़ा मत करो। यह सब कर्म का फल है। मैं जानता हूँ मेरे पिताजी बहुत कठोर स्वभाव थे। मैं जवान था और बालबच्चों वाला था। उस समय भी वह मुझे चपत लगा दिया करते थे। लेकिन मैं उनके सामने नहीं बोलता था। एक बार मेरा छोटा भाई सुरेन्द्रनाथ बसरेबगदाद से छुट्टी आया। सबको बहुत खुशी हुई। एक दिन सुरेन्द्रनाथ ने कहा कि पिताजी! मैंने आपको दो हजार रुपया भेजा था, वह आपने कहाँ खर्च किया। इतना सुनते ही पिताजी को बहुत क्रोध आया। कहने लगे कि तू कौन है मुझे पूछने वाला। सुरेन्द्र को मारने के लिए डन्डा उठाया। आगे आगे सुरेन्द्र और पीछे पिताजी। गांव से बाहर तक उसको गालियां देते हुए भागते गये। पिछला समय और था। अब तुम वैसी सख्ती नहीं कर सकते। बच्चों का मान करना सीखो। अब युग बदल गया है और युग के साथ अपने आपको बदलो Mend करो।

जो सतगुरु होय सहाई, तो सभी बात बन जाई ॥

सत्गुरु सहाई कैसे होगा? तुम लोग आते हो, मैं अपनी जिम्मे-

दारी को महसूस करता हूं। सोचता हूं कि फकीर तुमने क्या मकड़ी का जाल बना रखा है। "What can you do for others सतगुरु का कर्तव्य यह है कि हितैषी बनकर जीवों को सच्ची राय सच्चा हित दे। मेरे पास जो कोई आता है। मैं सच्चे दिल से उसके लिए यह चाहता हूँ कि उसका दुख दूर हो जाये और उसको सच्ची राय देता हूं। विचार को बदल दो तुम्हारा जीवन बदल जायेगा। लोग मेरे पास आते हैं मैं उनको यही कहता हूँ Health, wealth & peace to you यदि खाने को रोटी है, पहनने को कपड़ा है, रहने को मकान है और स्वास्थ्य है तो शान्ति है। मैं और क्या कर सकता हूँ। केवल good wishes देता हूँ ! मैं कोई करामाती नहीं हूँ। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके पिछले या इस जन्म के कर्मों का फल है। मुझे पिछले जन्म का फल मिलता था वह मिल रहा है। मगर मैंने कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया। मैंने मानवता मन्दिर बनाया है। यदि सचाई से चला तो ठीक अन्यथा बन्द कर दूँगा। मगर हेराफेरी नहीं करूँगा।

हुजूर दाता दयालजी महाराज ने आज्ञा दी थी कि निवल, अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना। इसलिये यही कहूँगा कि आवश्यकता से अधिक विषय मत कमाओ और आवश्यकता से अधिक खाना मत खाओ। यह तो है निबलता के लिये और अबलता के लिये यह है कि एक जगह विश्वास रखो। मैं यह नहीं कहता कि मुझ पर विश्वास रखो ; नहीं। जहां तुम्हारी इच्छा हो या जहाँ तुम्हारा प्रेम हो वहां विश्वास रखो। भवसागर से पार करने का मेरा कर्तव्य था। मैंने आपको भवसागर भी बता दिया कि यह सब मन का खेल है और जैसे मैं भवसागर से पार हुआ मैंने वह भी बता दिया।

बाते यह गित मिटाई, राधास्वामी चुप रहाई ॥

जिस पर उस मालिक की दया होती है वह इस ओर आता है। सच्चे दिल से चाहता हूँ कि तुम लोग सुखी रहो।

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

...ध्यात्मिक पुस्तकें

...रामायण	१०)
...वद्गीता भाग १	१)५०
भाग २	१)५०
... ३ भाग	४)
...ो योग ६ भाग	८)
...। प्रथम भाग	२)५०
द्वितीय भाग	२)७५
तृतीय भाग	१)७५
...ान ज्ञान प्रकाश	३)
...ि योग	)७५
...ा योग	१)
...ग	१)
...ोग प्रकाश	२)५०
...t on Anand yog	३)
...देश	३)
...ज भक्ति	१)
...ात्मक प्रायमर	१)
...ाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

...भूत	१)५०
...ाकू	३)७५
...कड़हारा सजिल्द	४)६२
...भिखारी	३)५०
जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)५०
तावदार मोती	२,५०
झलकदार मोती	३)
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)७५
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)५०
हिंसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर	
सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५०
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

प्रापक

श्री

सम्पादक — परमदयाल मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक—

श्रीमती सुधा मीतल

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh